तिलमति और घोड़ा

Tilmati and the Horse

तिलमति नाम का एक चूहा जंगल में रहता था। एक दिन तिलमति सुबह जल्दी उठ गया। आकाश में तब तारे टिमटिमा रहे थे, और सुबह नहीं हुई थी। तिलमति बाहर घूमने निकल गया। रास्ते में उसे एक बूढ़ा घोड़ा मिला, जो चुपचाप रो रहा था।

''तुम क्यों रो रहे हो? क्या बात है?'' तिलमति ने पूछा। बूढ़े घोड़े ने अपनी दुखभरी कहानी कही, ''मेरा मालिक एक घास बेचने वाला है। कई वर्षों तक मैंने उसकी अच्छी सेवा की। अब मेरा स्वास्थ्य गिर रहा है, उसे मेरी अब ज़रूरत नहीं है और मैं इस जंगल में आ गया हूं। मेरा मालिक मुझे तभी साथ वापस लेकर जाएगा जब मैं अपनी पूंछ से शेर को बांध कर उसके घर तक खींचता हुआ ले जाऊंगा।''

घोड़े की कहानी सुन कर तिलमति ने उसे आश्वस्त किया, ''मैं तुम्हारी मदद करूंगा।''

घोड़े को विश्वास नहीं हुआ, उसने पूछा, ''कैसे?'' तिलमति ने सोचा और कहा, ''तुम सिर्फ अपनी आखें बंद

There was a mouse named Tilmati who lived in a forest. One day Tilmati woke up in the early hours of the morning. The stars were shining in the sky. It was not yet dawn. Tilmati went out for a stroll. On his way he came across an old horse who was weeping.

"Why are you weeping? What's the matter?", asked Tilmati.

The old horse narrated his woeful tale. "My master is a grass-seller. I served him well for many years. Now that my health is failing, he does not need me any more and I have come to this forest. My master will take me back on one condition, that I tie a lion by my tail and drag him to his house."

On hearing the horse's story Tilmati assured him, "I will help you."

The horse unbelievingly asked, "How?" "Tilmati thought and said, "You just close your eyes and lie down as though dead. I

करो और ऐसे लेट जाओ जैसे कि तुम मर चुके हो। मैं जाकर शेर को यहां ले आऊंगा और उसे तुम्हारी पूंछ से बांध दूंगा। जैसे ही मैं तुम्हें इशारा करूंगा, तुम जितनी तेजी से दौड़ सकते हो उतनी तेजी से अपने मालिक के घर की ओर दौड़ जाना।'' तिलमति की योजना घोड़े को पसंद आई और वह वैसा ही करने को तैयार हो गया।

तिलमति शेर की खोज में गया। उसे पानी के तालाब के पास शेर मिला। तिलमति ने शेर से कहा, जंगल के राजा, मेरे पास तुम्हारे लिए नाश्ता तैयार है। जंगल में एक बूढ़ा घोड़ा पड़ा है। आओ और अपना नाश्ता खाओ।''

शेर के मुंह में पानी आ गया, उसने कहा, ''मुझे घोड़े के पास ले चलो।'' दोनों उस जगह के लिए चल दिए, जहां पर घोड़ा ऐसे पड़ा था जैसे मर गया हो। वहां पहुंच कर तिलमति ने सुझाव दिया, ''जंगल के राजा, तुम्हारे लिए यहां पर नाश्ता खाना ठीक नहीं है। यदि घोड़े का मलिक यहां आ गया तो तुम्हारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा। मैं घोड़े की पूंछ को तुम्हारे पैर से बांध दूंगा ताकि तुम इसे ऐसी जगह पर ले जा

will go and bring the lion here and tie him to your tail. As soon as I give you a signal, you must run as fast as you can towards your master's house."

Tilmati's plan appealed to the horse and he agreed.

Tilmati went off in search of the lion. He found the lion near a water resort and said, "Good morning, King of the jungle, I have some breakfast ready for you. There is an old horse lying in the forest. Come and eat your breakfast."

The lion's mouth watered and he said "Take me to the horse".

Both of them set off to the place where the horse was pretending to be dead. On reaching there Tilmati suggested, "King of the jungle, it is not right for you to eat your breakfast here. Suppose the horse's master happens to come along, it will spoil your fun. I will tie his tail to your leg so that you can drag him to a place, where you won't be disturbed."

सको जहां पर तुम्हें कोई परेशान नहीं करेगा।''

शेर को यह योजना ठीक लगी। वह तिलमति के बताए अनुसार तैयार हो गया। तिलमति ने घोड़े की पूंछ से शेर का पैर बांध दिया और घोड़े को भागने का इशारा किया।

घोड़ा तैयार ही था और वह जितनी तेजी से दौड़ सकता था उतनी तेजी से शेर को खींचता हुआ ले गया। जब तक घोड़ा अपने मालिक के घर पहुंचा तब तक शेर बेहोश हो चुका था। मालिक बाहर आया और वह शेर को देखकर चकित रह गया। उसने बूढ़े घोड़े की पीठ थपथपाई और शेर को रस्सी से बांध दिया।

तिलमति खुश था कि वह बूढ़े घोड़े की खुशियां वापस लाने में सफल हुआ।

The lion saw sense in this plan and agreed to do as he was told. Tilmati tied the horse's tail to the lion's leg and gave the signal to the horse to run.

The horse shot up and ran with all his might dragging the lion behind him.

By the time the horse reached his master's house the lion had fainted. The master came out and was taken aback at what he saw. He patted the old horse on the back and tied the lion with a rope.

Tilmati was pleased that he was instrumental in bringing happiness to the old horse.

महानिदेशक, सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
15-ए, सेक्टर 7, द्वारका,
नई दिल्ली - 110075 द्वारा प्रकाशित

अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,
ड्ब्लू - 30, ओखला इन्डिस्ट्रयल एरिया, फेस 2,
नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित

Published by Director General
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector 7, Dwarka,
New Delhi - 110075

Printed at
Aravali Printers & Publishers (P.) Ltd.
W-30, Okhla Industrial Area, Phase - 2
New Delhi - 110020

चित्र व आलेख : विजय परमार
Illustrations and text : Vijay Parmar